प्रथम समझ लेते है कि ये शंका करनेवाले परीक्षित कौन थे? महाभारत के युद्ध में पांडव कुल का समूल नाश करने के लिए ब्रम्हास्त्र का प्रयोग किया गया था। उस समय परीक्षित गर्भ में थे। जब ब्रम्हास्त्र गर्भ में परीक्षित को मारने गया तो भगवान श्रीकृष्ण ने उनको ब्रम्हास्त्र से बचाया था। परीक्षित का जब जन्म हुआ तो सब ओर देखकर परीक्षण कर रहे थे कि जिसको मैंने गर्भ में देखा था वे (श्रीकृष्ण) कहाँ है? वे तो बडे ही प्यारे थे, यहा तो उसके मुकाबले का कोई नही है, ये सब गंदे लोग दिख रहे है। इसलिए उनका नाम परीक्षित पड गया। मतलब ये कि परीक्षित को गर्भ में ही भगवत् प्राप्ती हो गयी थी। फिर वे क्यूं शंका कर रहे थे?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

ये सब हम जैसे लोगों के कल्याण के लिए किया जाता है। संसारी लोग भगवान की करूणा एवं दिव्यता को नही महसूस कर सकते। उनको भगवान और महापुरूष के आचरण संसारी व्यक्ति जैसे ही लगते है। इसलिए उनके मन में मायिक शंका उत्पन्न होती है। उन शंकाओं का समाधान करने के लिए एक महापुरूष शंका का अभिनय करता है तो दूसरा उसका समाधान करता है जिससे मायिक जनों का शंका निरसन हो और वो भगवान की ओर चले।

ऐसा ही सवाल पहले भी परीक्षित ने उठाया था। अघासुर राक्षस एक गुफा का रूप लेकर श्रीकृष्ण के सखाओं को खा गया था। श्रीकृष्ण उसके मुँह में चले गये और लंबे होते गये। अघासुर का मुँह फट गया जिससे उसकी मृत्यु हो गयी। भगवान ने सब सखाओं को मरने से बचाया था। उस अघासुर को भगवान ने अपना लोक दिया था। तब भी परीक्षित ने पूछा था कि अघासुर को गोलोक कैसे मिला जब उसकी मनीषा श्रीकृष्ण और सखाओं को मारने की थी?

शुकदेव ने जबाब दिया था कि अघासुर ने शत्रुता से भगवान

चिंतन कर अपने मन को भगवान में एक कर दिया था। मन से भगवान का चिंतन कर जीव भगवत्प्राप्ति कर लेता है। यहा तो भगवान खुद उसके मुँह में चले गये थे। किसी भी भाव से - काम से, क्रोध से, भय से, द्वेष से, ईर्ष्या से यदि भगवान में मन का एकत्व हो तो भगवान का लोक मिल जाता है।

अब भी शुकदेव ने वही बात दोहरायी और कहा कि यहा तो गोपियाँ श्रीकृष्ण से प्यार करती थी। जब शत्रुता भगवान से करनेवाले को गोलोक मिलता है तो प्यार करनेवाली गोपियों को गोलोक मिला इसमें क्या आश्चर्य है? वस्तु ज्ञान की अपेक्षा नही रखती वो अपना फल देती है। जैसे कोई जहर जान के खाये या अनजाने में खाये तो मरेगा। जहर अपना कमाल दिखाएगा। ऐसे ही श्रीकृष्ण शुद्ध व्यक्तित्व है। उनमें चाहे जिस भाव से मन का एकत्व हो जाय तो जीव का अंत:करण शुद्ध हो जाता है तथा उसको भगवान का लोक मिलता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132